वेद विज्ञान (वैदिक साहित्य में विद्युत)

वेद सत्य-ज्ञान और सत्य विद्याओं की अक्षय निधि है। यद्यपि वैदिक साहित्य का एक बहुत विस्तृत एवं विशाल भंडार या तो लुप्त हो गया या हमारे पराभव काल में आक्रान्ताओं द्वारा नष्ट कर दिया गया, फिर भी हमारे मनीषियों द्वारा वेद संहिताओं की रक्षा करके एक महान् स्तुत्य कार्य किया जिससे हम आज उस अपौरुषेय ज्ञान की क्षत्रछाया में बैठकर कुछ शान्ति की अनुभूति कर पा रहे हैं। वेद मंत्रों के विनियोग की परिपाटी तो है ही, अपितु समस्त वैदिक-ज्ञान आध्यात्मिक परक होने के साथ ही साथ भौतिक विद्याओं से भी ओतप्रोत है। चूंकि मानव को जीवन में पग-पग पर सभी प्रकार के साधनों की आवश्यकता पड़ती है अत: वे सभी विज्ञान के श्रोतों को प्रकट करते हैं। जैसा कि वेद स्वयं कहते हैं -

ये वावृधन पार्थिवाय उरावन्तरिक्ष आ।
वृजने वा नदीनां सधस्थे वा महो दिव: ॥ ऋ. ५-५२-७

हे मनुष्यों ! बहुत रूप वाले, आकाश, पृथ्वी, जल वा प्रकाशमान लोकों में जो भी पदार्थ विद्या से, विज्ञान से जानकर वृद्धि को प्राप्त होते हैं उन्हें विशेष कर जानिए।

आज मानव के कार्य-व्यवहार में विद्युत का विशेष महत्व है। उसका विवरण देने की आवश्यता नहीं। सूक्ष्मता और स्थूलता की दृष्टि से सभी शिल्पकार्यों में विद्युत-शक्ति अपना कार्य कर रही है। यह ऊर्जा का श्रोत है। अग्नि, सूर्य, वायु, आदि भी विद्युत उत्पादन के श्रोत हैं। परन्तु अधिकांशत: यह एक घर्षण प्रणाली द्वारा ही प्राप्त की जा रही है। आधुनिक काल में वैज्ञानिक आविष्कारों का श्रेय पाश्चात्य लोगों को जाता है। एक लम्बे समय तक पराधीन रहने के कारण हमारे जीवन का बौद्धिक विकास अविरूद्ध हो जाने से हम कोई विकासोन्मुखी कार्य कर ही नहीं सकते थे क्यों कि **''पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।''** धीरे धीरे हमारा प्राचीन वैभव हमसे भुलाया जा रहा था। हम अपने वेद-शास्त्रों को भूल रहे थे - परन्तु अब जबकि पराधीनता की बेड़ी कट चुकी है तो हमें अपने प्राचीन वेद ज्ञान को पढ़ने -पढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। परमात्मा ने वेदों में मानव कल्याण के लिए सभी विधि-विधानों का प्रकाश किया है। जब जीवन में अन्य साधनों के साथ ही विद्युत की इतनी आवश्यकता रहती है तभी तो वेदों में भी इसका प्रकाश किया है जिससे मनुष्य जीवन को निरापद ढंग से व्यतीत कर सकें।

अग्नि: पूर्व रूपम्। आदित्य उत्तर रूपम्। आप: सन्धि:।
वैद्युत: सन्धानम्। तै. आ. ७-३-२। तै. उ. १/३/२।
विद्युत्सूर्ये समाहिता ॥ तै. अ. १-९-२।

अत: विद्युत के कई श्रोत कहे गये हैं। अग्नि, सूर्य तथा जलादि से विद्युत उत्पन्न करने का इन्हें साधन माना है। अग्नि तथा

जल द्वारा तो प्रभूत मात्रा में विद्युत का उत्पादन हो रहा है परन्तु सूर्य द्वारा भी विद्युत प्राप्त की जा रही है। अभी उसका प्रारम्भ है भविष्य में सूर्य से विद्युत की पूर्ति करना सम्भव हो जायेगा। विद्युत एक परिमाणवीय क्रिया है, जैसे-जैसे विशेष ऊर्जा देने वाले पदार्थों की खोज होती जायेगी वैसे ही उनका परमाणु विखंडन करकें अधिक ताप द्वारा विद्युत उत्पादक यंत्रों को चलाकर अधिक मात्रा में विद्युत उत्पादन करने में सक्षम होंगे। हम अपने लेखों द्वारा यह प्रतिपादन करने का प्रयास कर रहे हैं। कि हमारे वैदिक साहित्य को नष्ट करने की जो चेष्टा विदेशियों ने की, उसके प्रति प्रबुद्ध देश बासियों का ध्यान आकृष्ट हो। अपने वैभवशाली अतीत को देखें, समझे और उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हों। विज्ञान-गणित-ज्योतिष आदि विषयों में अग्रणी हों जिससे भारत पुनः विश्व गुरु का पद प्राप्त कर सके।

भारद्वाज ऋषिकृत विमानशास्त्र में अनेक प्रकार के यन्त्रों का वर्णन दिया है जो विद्युत से चलते थे। विश्वदर्शन दर्पन (टेलीविजन) का वर्णन इसमें स्पष्ट रूप से किया गया है। तब हम आध्यात्म तथा विज्ञान का सम्मेल करके अपनी नई आने वाली पीढ़ी को इस योग्य बनायें कि ईश्वरीय ज्ञान वेदों में से चुन-चुन कर सभी सत्य विद्याओं का आलोक विश्व में 'फैला दें'। विद्युत का प्रकरण एक ऐसा विषय है जो निरंतर चलते रहने वाला है। यहां तो हम यह प्रयास कर रहे हैं कि किसी विषय पर वेदों से हमें क्या और कहाँ उसकी उपलब्धता है। विद्युत विषय को वेदों के आधार पर उसे स्पष्ट करना हम अपना परम धर्म मानते हैं।

ऋ. १/३२/१३ **आङ्गिरसो हिरण्यस्तूप ऋषिः। इन्द्र देवता।**
नास्मै विद्युन्न तन्यतुः सिषेध न यां मिहमकिरद्धादुनिं च।
इन्द्रश्च यद्युयुधाते अहिश्चोता परीभ्योमघवा विजिग्ये॥

प्रथम मेघों में उत्पन्न होने वाली विद्युत का वर्णन है। यह विद्युत शक्ति तो रखती है परन्तु सूर्य शक्ति का अतिक्रमण नहीं कर सकती। हाँ इन्द्र इसके सहयोग से वृत्तपर विजय आवश्यक पा लेता है।

ऋ.१/२३/१२ **काण्वोमेधातिथि ऋषिः। विश्वे देवाःदेवता।**
हस्काराद्विद्युत स्पय्यतो जाता अवन्तु नः।
मरूतो गळयन्तु नः॥

अति प्रकाश वाली विद्युत हमें प्राप्त होती है जिससे सब प्रकार के कार्यों को साधते हैं। विद्युत के साथ ही मरूत भी हमें सुख प्रदान करते हैं।

ऋ. १/६/५ **गौतमो नोधा ऋषिः। इन्द्रो देवता।**
ईशान कृते धुनयो रिशादसो वाता न्विद्युत स्तविषीभिरक्रत।
दुहन्त्यूधर्दिव्यानि धूतयो भूमिं पिन्वन्ति पयसा परिज्रय॥

इस मंत्र में वायु से यन्त्र चलाकर विद्युत उत्पादन का वर्णन है। जहाँ वायु वेग से चलती है वहाँ आसानी से विद्युत प्राप्त की जा सकती है। मंत्र ऋ. १/६४/९ में रथों (वायुयानों) में विद्युत प्रयोग के लिए कहा गया है। पृथ्वी पर चलने वाले वाहन भी विद्युत से चलाने का वर्णन है।

ऋ. ८/१४/२९ **दीर्घतमा ऋषिः। विश्वेदेवा देवता।**
अयं सर्वं पड्न्के येन गौरभीवृता मिमाति मायुं ध्वसनाषधिश्रिता।
सा चित्तिमिर्नि हि चकार मर्त्यं विद्युद्भवन्ती प्रति वव्रि मौहत॥

विश्व-ब्रह्माण्ड के कार्यकलाप आकर्षण-प्रत्याकर्षण-वाष्पी करण-शीतकरण वायुभ्रमण-नये-नये पदार्थों का प्राकट्य सब विद्युत द्वारा घटित हो रहे हैं। परमात्मा परमाणुओं को गति शील बनाए हुए है इससे श्रष्टिक्रम अबाधगति से चल रहा है। मंत्र में मनुष्य के लिए विद्युत अपने रूप को पृथ्वी पर प्रकट करती है जिससे वह उससे अनेक उपयोगी कार्य कर सके।

ऋ. १/१६८/८ **अगस्त्य ऋषिः। मरुतो देवता।**
प्रतिष्ठोभन्ति सिन्धवः पविभ्यो यदभ्रियां वाचमुदीरयन्ति।

अव स्मयन्त विद्युतः पृथिव्यां यदी घृतं मरुतः प्रष्णुवन्ति॥

जब मेघों से घनघोर वर्षा होती है तब नदियों में जल क्षोभित होता है अर्थात् प्रभूत जल की मात्रा हो जाती है। इस जल से विद्युत उत्पादन करते पृथ्वी पर मुस्कान फैला दी जाती है अर्थात् चारों ओर प्रकाश दीपो से जगमग होने लगती है। धन्य हो परमात्मा! तूने वेदों में कैसा-कैसा अद्भुत ज्ञान-विज्ञान प्रकाशित किया है।ऋ३/१/१४ के गाथिनो विश्वामित्र ऋषि मंत्र दृष्टा हैं। अग्नि देवता हैं। जैसे बुद्धिस्थ जीव का आत्मा से सम्मेल करते हैं उसी प्रकार विद्युत-अग्नि द्यावा पृथिवी में अभिव्याप्त है उसको जानकर अभीष्ट सिद्धियां प्राप्त करनी योग्य है। ऋ. ५/५२/६ के अनुसार विद्वान जन उसी प्रकार विद्युत आदि विद्याओं का प्रकाश करें जैसे सेनाएं अपने पराक्रम से राष्ट्ररक्षा करके प्रजा को सुख का प्रकाश करती हैं।

ऋ. ५ /५४/११ **श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। मरुतो देवता।**
अंसेषु व ऋष्टयः पत्सु खादयः वक्षसु रुक्मा मरुतो रथे शुभः।
अग्निभ्राजसो विद्युतो गभस्त्योः शिप्राः शीर्षसु वितता हिरण्ययीः।

इस मंत्र में सौनिकों के पास क्या क्या युद्ध सामिग्री हो यह प्रकट किया गया है। विपुल मात्रा में शस्त्रास्त्र, खाद्यसामग्री, सुन्दर श्रेष्ठ विमान, वक्ष पर प्रहार से बचने के लिए चमचमाते कवच, संयोजी विद्युत किरणें जो शत्रु के विमानों को नष्ट कर सकें तथा शिरस्त्राण जिनसे शिर की रक्षा हो। तब यह निश्चत है कि शक्तिशाली विद्युत-किरण पुंज का प्रयोग सेनाओं द्वारा प्रयोग करने का वेदों में उल्लेख है। मंत्र ऋ. ५/८६/३ में उपदेश किया गया है कि जैसा सूर्य अपनी किरणों से मेघ का नाश करके जल वर्षाता है और उससे प्रजा आनन्दित होती है, उसी प्रकार राजपुरुष लोग विद्युत का तीव्र रूप में प्रयोग करके शत्रु का नाश करें और प्रजा को आनन्दित करें।

ऋ. ५/८७/१० **एवयामरूदात्रेय ऋषिः। मरुतो देवताः।**
प्र ये दिवो बृहतः श्रृण्विरे गिरा सुशुक्रनः सुम्व एवयामरुत्।न येषामिरी रघस्थ ईष्ट आ अग्नयो न स्वविद्युतः प्रस्यन्द्रासो धुनिनाम्।

इस मंत्र में यह प्रकाशित किया है कि विद्युत-तरंगों की कम्पन क्रिया से हम अपनी वाणी को शुद्ध रूप में अन्यत्र सुन सकते हैं। उपरोक्त सभी मंत्रो में विद्युत-विज्ञान का दिग्दर्शन कराया गया है। आज विद्युत-कवच (शैल) के प्रयोग से छोटे-छोटे यंत्र बनाकर विदेशी लोग धन कमा रहे हैं। अभी हम विज्ञान की दौड़ में पीछे हैं परन्तु विश्वास है कि हम अपने प्राचीन वैभवशाली अतीत के आधार पर पुनः विश्व में ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी पंक्ति में पहुँच जायेंगे।

ऋ. ३२/२ **स्वयम्भु बह्म ऋषिः। परमात्मा देवता।**
सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युतः पुरुषादधि।

नैनमूर्ध्वं न तिर्य्यञ्चं न मध्ये परिजग्रभत् ॥

यह मंत्र यजुर्वेद का है। भौतिक रूप से विद्युत लोक हितकारी रूप में उत्पादित है परन्तु इसका सदुपयोग या दुरूपयोग मनुष्य की बुद्धि पर निर्भर करता है। परमात्मा को विद्युत: (विशेषण द्योतमानात्) से ग्रहण किया है। वह कालचक्र का निर्माण करता है। उसे ऊपर, नीचे, मध्य या सभी दिशाओं में किसी से स्थूल रूप में ग्रहण नहीं किया जा सकता। अत: परमात्मा की सामर्थ्य से ही सारे शुभ कार्य किये जा सकते हैं।

अत: हे पाठक वृन्द ! प्रभु की अमृत-वाणी वेद का रसास्वादन करते रहिये एवं इसमें जो भी आध्यात्मिक-भौतिक ज्ञान के आदेश हैं उनको ग्रहण करके परोपकार एवं स्वोपकार में रत रहकर श्रेष्ठजनों की उन्नति में सहायक हूजिंए। यदि देशवासी वेदों का पठन-पाठन करेंगे तो आवश्य ही हम अपने प्राचीन वैभव को प्रतिष्ठापित करने में सफल होंगे। परमात्मा अपना प्रेम और प्यार देता रहे।

-प्रहलाद स्वरूप आर्य,

आर्यसमाज नयागंज, हाथरस (उ. प्र)